

धीरे-धीरे आई हममें चेतना

वीणा शिवपुरी

आज सब तरफ जागरूकता और चेतना की बात होती है। सवाल उठता है कि आखिर यह चेतना है क्या? चेतना शब्द का संबंध है चेतन से या जागने से। जब हम किसी से कहते हैं कि 'बहना चेत जा' तो हमारा मतलब होता है संभल, जाग, होशियार हो जा। अपने प्रति अन्याय को समझ।

पहली सीढ़ी

सही और गलत की समझ, न्याय और अन्याय की समझ, अपने हकों और अधिकारों की समझ ही चेतना है। चेतना अन्याय से लड़ने की पहली सीढ़ी है। जब यह पता लग जाता है कि हमारे साथ अन्याय हो रहा है तब मन में सवाल उठता है—

ऐसा क्यों हो रहा है?

क्योंकि हम विरोध नहीं कर रहीं।

क्या विरोध करते ही हालात बदल जाएंगे?

नहीं, एकदम से नहीं। समय लगेगा। संघर्ष करना होगा।

सोचो तो, जिसके पास मनमानी करने का हक है वह उसे आसानी से क्यों छोड़ देगा भला। इसीलिए एक औरत के विरोध करने से कुछ न होगा। दो के करने से कुछ होगा। जब हर घर में अन्याय का विरोध होने लगेगा—तब?

तब मर्द को बदलना पड़ेगा।

समाज को बदलना पड़ेगा।

यह तभी हो सकेगा जब आज की बच्चियों में चेतना का बीज फूटेगा।

चेतना के साथी

चेतना अपने आपमें बड़ी चीज है पर उसे ताकत देने वाले कुछ साथी हैं। तभी चेतना संघर्ष का रूप ले पाती है। ये साथी हैं—शिक्षा, आत्म-सम्मान, आर्थिक आत्म-निर्भरता, सेहतमंद शरीर, अधिकारों की समझ और कानूनी जानकारी।

शिक्षा : शिक्षा का मतलब सिर्फ लिखना-पढ़ना सीखना नहीं है। वह तो ज़रिया है जानकारी पाने का। कहां क्या हो रहा है? क्यों हो रहा है? उसे कैसे बदला जा सकता है। बाकी औरतें क्या कर रही हैं? पढ़ने, लिखने, सुनने से उलझे विचारों को सुलझाने में मदद मिलती है।

आत्मसम्मान : यह शिक्षा के साथ आता है। आत्मविश्वास और आत्मसम्मान यानि अपने आप पर भरोसा बढ़ता है। अपनी इज्जत का अहसास जगता है। इसी से मिलती है अन्याय से लड़ने की ताकत।

आर्थिक आत्म-निर्भरता : हर तबके की औरत सदियों से भरपूर मेहनत करती आई है। खेत-खलिहान, घर-दुकान, मिल-कारखाने इसके सबूत हैं। पूरी दुनिया की मेहनत का दो तिहाई हिस्सा औरतों की मेहनत का होता है। लेकिन उन्हें कुल आमदनी का सिर्फ दसवां हिस्सा मिलता है। यानि उनका ज्यादातर काम मुफ्त होता है। औरत के काम का भुगतान हो। उस रूप पर उसका हक हो। इससे औरत की ताकत बढ़ेगी।

सेहतमंद शरीर : औरत के लिए जीना भी एक संघर्ष है। फिर इज्जत और समानता से जीने की लड़ाई तो अभी सामने है। औरत अपने हिस्से से ज्यादा मेहनत करती है पर अपने हिस्से का खाना, इलाज और देखभाल नहीं पाती। यह लड़ाई भी खुद उसे ही लड़नी है। अपने लिए और अपनी बेटियों के लिए।

अधिकारों की समझ : बेटियों को ग़म खाने और आंसू पीने का पाठ नहीं पढ़ाना है। मिल-बांट कर बराबर खाना और इज्जत से जीना सिखलाना है। यही शिक्षा उसे अपने अधिकारों की समझ देगी। खाने-पीने, घूमने, पढ़ने, लाड़-प्यार और माता-पिता की जायदाद में उसका भी भाई के बराबर हिस्सा है।

कानूनी जानकारी : इस देश का कानून स्त्री और पुरुष को बराबर मानता है। जब कानूनों का इस्तेमाल न हो वे किताबों में बंद काले अक्षर ही रहते हैं। इसलिए अपने कानूनी अधिकारों की जानकारी होना ज़रूरी है।

इन सब साथियों की मदद से चेतना की धार और पैनी होगी।

गांठ बांध लेने वाली बातें

लड़के-लड़की में ऊंच-नीच भगवान या कुदरत ने नहीं बनाई। यह भेदभाव पितृसत्तात्मक समाज की वजह से है।

चेतना से औरत ताकतवर बनेगी। तभी पितृसत्ता को चुनौती दी जा सकती है।

शिक्षा, सेहत, भोजन, मनोरंजन, देखभाल पाने का बेटे को भी उतना ही हक है जितना बेटे को।

अन्याय करना बुरा है और अन्याय सहना भी। उससे अन्याय को बढ़ावा मिलता है।

आमतौर पर अपने हक पाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

“अब रुकेंगे न किसी भी हाल, आ गई चेतना अब पूछेंगे हम खूब सवाल, आ गई चेतना”